



unacademy

Presented By:-YOGENDRA SINGH CHOUHAN

हिंदी की बोलियों को भाषा का दर्जा/स्वत्रंता आन्दोलन के दौरान राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी का विकाश

unacademy

- इन्दौर सम्मेलन के बाद उन्होंने हिंदी के कार्य को राष्ट्रीय व्रत बना दिया। दक्षिण में प्रथम हिंदी प्रचारक के रूप में गाँधीजी ने अपने सबसे छोटे पुत्र देवदास गाँधी को दक्षिण में चेन्नई भेजा। गाँधीजी की प्रेरणा से मद्रास (1927 ई.) एवं वर्धा (1936 ई.) में राष्ट्रभाषा प्रचार सभाएँ स्थापित की गईं।

-

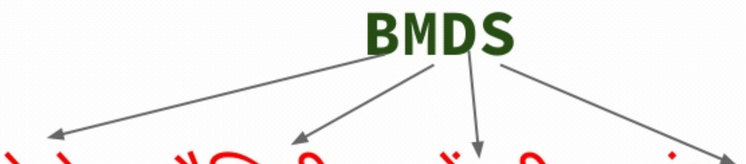
भारत की भाषाएँ:-संविधान की अनुसूचि आठ के अनुसार

- भारतीय संविधान द्वारा मान्यता प्राप्त भाषाओ की संख्या 22 हैं। -
- 1950 में भारतीय संविधान की स्थापना के समय मे मान्यता प्राप्त भाषाओं की संख्या 14 थीं
- (1)असमिया(2)बंगाली(३)गुजराती(4)हिंदी(5)कश्मीरी(6)कन्जड़(7)मलयालम(8) मराठी(9)उड़िया (10)पंजाबी(11)संस्कृत(12)तमिल(13)तेलुगू(14)उर्दू
- सन 1967 में 21वाँ संशोधन कर सिन्धी भाषा को जोड़ा गया 15 भआषाए हो गई।
- 26 साल बाद सन 1992 में 71वॉ संशोधन कर तीन भाषाओं को जोड़ा गया।

कोने में मणि

कोंकणी, नेपाली, मणिपुरी और इस तरह भाषाए 18 हो गई।

- सन **2004** मार्च में चार भाषाओं को जोड़ा गया।



बोड़ो, मैथिली, डोंगरी, संथाली और इस तरह देश मे कुल भाषाए 22 हो गई।

- 8वीं अनुसूची में स्थान पाने वाली हिंदी क्षेत्र की एक मात्र बोली मैथिली हैं।
- सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वरयन मंत्रालय की 2011 की रिपोर्ट के अनुसार मातृभाषाओ की संख्या **234**
- शास्त्रीय भाषा का दर्जा पाने वाली पहली भाषा तमिल है।
- शास्त्रीय भाषा का दर्जा पाने वाली अन्य भाषाए

(1)संस्कृत**(2)**कन्नड**(3)**मलयालम**(4)**तेलुग **(5)**उड़िया

- नागालैंड की राजभाषा "अंग्रेजी"है।
- जम्मू&कश्मीर की राजभाषा "उ्दू"
- गोवा की राजभाषा कोकणी है
- भारत के संविधान दवारा-निर्धारित सुप्रीम कोर्ट और हाई कोर्ट की राजभाषा"अंग्रेजी"
- त्रिपुरा की राजभाषा “बंग्ला"हैं। इसके अलावा भी कोकबरोक और हिंदी बोली जाती है
- उत्तराखंड की राजभाषा "संस्कृत'है
- लक्ष्यदीप की प्रमुख भाषाए 'जेसरी और महल"' हैं।
- पंड्चेरी की भाषा विदेशी “फ्रेंच"
- अंग्रेजी मान्यता प्राप्त भाषाओं की सूची में शामिल नही हैं।

unacademy

- संविधान की **8 वीं अनुसूची में 38 अन्य** भाषाओं को शामिल करने की माग है।
- बज्जिका (भोजपुरी)बिहार से बुन्देली (MP)बृजभाषा उत्तर प्रदेश से
- तेलंगाना राज्य की राजभाषा उर्दू 1966(2)अधिनियम के तहत पहली भाषा तेलुगू।
- चोल शासकों की राजभाषा "तमिल"
- मुगलकाल की राजभाषा "फारसी" है
- संस्कृत से सर्वाधिक प्रभावित भाषा "तेलुग्"
- दक्षिण भारत की सर्वाधिक प्राचीन भाषा – तमिल
- मुगलकाल में रेख्ता कही जाने वाली भाषा – उर्दू
- हिंदी के बाद विश्व में बंगला भाषा ज्यादा बोली जाती है

- भारत में तीसरी सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा – तेलुगु

  1. हिंदी **2.** बांग्ला **3.** तेलुगु

स्वत्रंता आन्दोलन के दोरान राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी का विकाश

- उन्नीसवीं शताब्दी में भारत में भावनात्मक संदर्भ की क्रांति शुरू हुई। उस समय देश की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्थिति अत्यन्त दयनीय हो चुकी थी। देश में होने वाले आन्दोलनों से जन-जीवन प्रभावित हो रहा था। भारत की राष्ट्रीयता और राष्ट्रीय आन्दोलन के लिए एक भाषा की आवश्यकता सामने आई

- "सन् 1857 का आन्दोलन दासता के विरूद्ध स्वतंत्रता का पहला आन्दोलन था।

- यह आन्दोलन यद्यपि संगठन और एकता के अभाव के कारण असफल रहा, पर इसने भारतवासियों के हृदय में स्वतंत्रता की उत्कट अभिलाषा उत्पन्न कर दी

- आगे चलकर जब भारत के विभिन्न प्रांतों में स्वतंत्रता के लिए संगठित प्रयत्न आरंभ हुए तो यह स्पष्ट हो गया कि बिना एक समान्य भाषा के देश में संगठन होना असंभव है।"

unacademy

- राजनीतिक आंदोलनों में हिंदी मुख्य भाषा सिद्ध हुईं इस प्रकार हिन्दी को व्यापक जनाधार मिला।

- विभिन्न व्यक्तियों और संस्थानों द्वारा हिंन्दी-प्रयोग हेतु आन्दोलन के रूप में कार्य किया गया। बिहार ने सबसे पहले अपनाई थी हिंदी को, बनाई थी राज्य की अधिकारिक भाषा बिहार देश का पहला ऐसा राज्य है, जिसने सबसे पहले हिंदी को अपनी अधिकारिक भाषा माना है।

- लोकमान्य तिलक प्रारंभ में परम विनम्र नेता थे। परिस्थितियों ने उन्हें ओजस्वी नेता बना दिया। "स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है" का नारा देने वाले तिलक 'स्वदेशी' के प्रबल समर्थक थे। उनकी मान्यता थी कि हिन्दी ही एकमात्र ऐसी भाषा है, जो राष्ट्रभाषा की पदाधिकारी है

unacademy

- लोकमान्य तिलक देवनागरी को 'राष्ट्रलिपि' और हिंदी को 'राष्ट्रभाषा' मानते थे। उन्होंने नागरी प्रचारिणी सभा, काशी के दिसम्बर, 1905 के अधिवेशन में कहा था-

- उन्होंने जनसामान्य तक अपने विचार पहुँचाने के लिए 'हिन्दी केसरी' साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन किया। हिन्दी का यह पत्र पर्याप्त लोकप्रिय हुआ। लोकमान्य तिलक जीवन भर हिंन्दी के प्रचार-प्रसार में लगे हुए थे। उन्होने हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में अपनाने के लिए बार-बार आग्रह किया था।

- निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि उन्होंने अंग्रेजी में भाषण देना छोड़कर हिंन्दी सीखी और हिन्दी के प्रबल समर्थक बन गए थे, यह उनका हिन्दी और देश-प्रेम ही था।

❑ लाला लाजपतराय

- पंजाब केसरी लाला लाजपतराय प्रबल आर्य समाजी देशभक्त थे। वे महान-प्रेमी और ओजस्वी वक्ता थे। स्वदेशी वस्तुओं के समर्थक और विदेशी वस्तुओं के विरोधी थे। उन्होंने अंग्रेजी और पंजाबी पत्र के साथ 'वन्देमातरम्' दैनिक उर्दू पत्र का प्रकाशन किया

- पंजाब में हिन्दी प्रचार-प्रसार में लाला लाजपतराय की बलवती भूमिका थी। उन्होंने सन् 1911 में पंजाब शिक्षा संघ की स्थापना की। शिक्षा में हिन्दी को समुचित स्थान दिलाने का सराहनीय प्रयास किया। सन् 1886 में लाहौर में दयानन्द ऐंग्लो-वैदिक कॉलेज की स्थापना की गई। इससे हिन्दी प्रसार का सुदृढ़ आधार मिला। इस कॉलेज में सभी विद्यार्थियों को हिन्दी पढ़ने की अनिवार्यता थी।

- लाला लाजपतराय के प्रयास से पंजाब विश्वविद्यालय में हिन्दी को सम्मानीय स्थान मिला

❑ पं॰ मदन मोहन मालवीय

- मालवीय जी महान् राष्ट्रीय नेता थे। उन्हें तीन बार हिन्दु महासभा के अध्यक्ष पद पर प्रतिष्ठित कियागया था। वे सन् 1884 से राष्ट्रीय कार्यों में समर्पित होकर लग गए थे। वे अपने क्रियाकलापों में हिन्दी का प्रयोग करते हुए औरों में भी हिन्दी-प्रेम जगाते रहे हैं

- सन् 1886 के अधिवेशन में मालवीय जी के व्याख्यान से प्रभावित होकर काला कांकर के राजा ने इन्हें 'हिन्दुस्तान' दैनिक पत्र का संपादक बनाया था। यहीं से उनकी हिन्दी-सेवा का अनुप्रेरक रूप सामने आया है

- मालवीय जी ने हिन्दी प्रचार-प्रसार को गति देने के लिए सन् 1910 में प्रयोग (इलाहाबाद) से 'मर्यादा' हिंदी मासिक पत्रिका और 20 जुलाई, 1933 'सनातन धर्म' हिंदी पत्र का प्रकाशन शुरू किया है।

unacademy

❑ महात्मा गाँधी

- स्वतंत्रता आन्दोलन में महात्मा गाँधी सजग, साहसी और आदर्श नेता के रूप में सामने आये। भारतीय आदर्शों को समाज में पल्लवित कराने में गाँधी जी ने अपने जीवन का हर पल लगाया। दक्षिण अफ्रीका से लौटने के बाद हिन्दी और हिन्दुस्तान को जगाने में लग गये। सन् 1917 में गुजरात प्रदेश के भड़ौच गुजरात शिक्षा परिषद् के अधिवेशन में उन्होंने अंग्रेजी को राष्ट्रभाषा बनाने के विरोध किया और हिन्दी के महत्त्व पर मुक्तकंठ से चर्चा की थी-

- महात्मा गाँधी ने सन् 1918 में हिन्दी साहित्य सम्मेलन के इन्दौर के अधिवेशन में हिन्दी-प्रेम प्रकट करते हुए आह्नान किया था :

  ”आप हिन्दी को भारत का राष्ट्रभाषा बनाने का गौरव प्रदान करें। हिन्दी सब समझते हैं। इसे राष्ट्रभाषा बनाकर हमें अपना कर्तव्य-पालन करना चाहिए।“

❑ राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन

- राष्ट्रभाषा हिन्दी को संघ की राजभाषा बनाने का जो प्रयास राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन ने किया है, वह सदा याद किया जाता रहेगा। पं॰ मदनमोहन मालवीय के दर्शाये गए मार्ग पर चल कर इन्होंने हिन्दी की अनुपमेय सेवा की है। इनके द्वारा हिन्दी साहित्य सम्मेलन के माध्यम से की गई हिन्दी की सेवा अनपमेय रही है। टण्डन जी हिन्दी साहित्य सम्मेलन के संस्थापकों में से थे। इन्हीं की प्रेरणा से महात्मा गाँधी जी भी हिन्दी साहित्य सम्मेलन से जुड़े हैं।

❑ काका कालेलकर

हिन्दी के प्रचार-प्रसार में अहिंदी भाषियों का नाम गौरव से लिया जाता है। ऐसे हिन्दी-प्रेमियों में काका कालेलकर का नाम विशेष श्रद्धा से लिया जाता है। इन्होंने हिन्दी के प्रसार में समर्पित होकर कार्य किया हैं उन्होंने राष्ट्रभाषा प्रचार समिति से जुड़कर और गुजरात में रहकर हिन्दी-प्रसार को नई दिशा प्रदान की है।

unacademy

❑ सेठ गोविन्ददास

- हिंदी के प्रसार के साथ इसे राजभाषा के प्रतिष्ठित पद पर सुशोभित करवाने में सेठ गोविन्ददास की अविस्मरणीय भूमिका रही है। ये उच्चकोटि के साहित्यकार हैं। आपकी नाट्यकृतियों से हिंदी साहित्य मोहक रूप में समृद्ध हुआ है। उन्होंने जबलपुर से शारदा, लोकमत तथा जयहिन्द पत्रों की शुरूआत कर जन-मन में हिंदी के प्रति प्रेम जगाने और साहित्यिक परिवेश बनाने का अनुप्रेरक प्रयास किया है।

❑ साहित्यिक संस्थाएँ

- **भारतेन्दु मण्डल:-**

आधुनिक हिन्दी साहित्य के जन्मदाता भारतेन्दु हरिशचन्ट्ठद्र ने साहित्यकारों का एक मण्डल बनाया था। यह मण्डल हिन्दी साहित्य के माध्यम से सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन का अभिलाषी था। मण्डल के सदस्यों द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में क्रांतिकारी परिवर्तन के लिए हिन्दी साहित्य की विविध विधाओं पर महत्वपूर्ण कृतियों की रचना की, पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन किया। भारतेन्दु हरीशचन्द्र ने हिन्दी पर व्याख्यान देते हुए कहा था-

unacademy

- नागरी प्रचारिणी सभा, काशी

इस सभा की स्थापना 10 मार्च, 1893 में हुई। इस संस्था को संरक्षक के रूप में बाबू श्यामसुन्दर दास, श्री गोपाल प्रसाद खत्री और पं. राम नारायण मिश्र आदि का आशीर्वाद मिला। इस संस्था से अन्य जुड़ने वाले गणमान्य विद्वानों में महामना मदन मोहन मालवीय, श्रीधर पाठक, श्री अम्बिका दत्त व्यास, श्री राधाचरण गोस्वामी और बदरी नारायण चौधरी आदि प्रमुख हैं। कोश-रचना, हिन्दी साहित्य के इतिहास-लेखन, हस्तलिखित ग्रंथो की खोज और संगोष्ठी आयोजन में यह संस्था देश में शीर्ष स्थान पर है।

- हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग

सम्मेलन हिन्दी प्रचार-प्रसार की सर्वप्रमुख साहित्यिक संस्था है। सन् 1910 में सम्मेलन का प्रथम अधिवेशन महामना मदनमोहन मालवीय की अध्यक्षता में हुआ। राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन ने इसी समय न्यायालय में हिन्दी और देवनागरी प्रयोग पर बल दिया।

unacademy

- दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

महात्मा गाँधी ने हिन्दी सम्मेलन के सन् 1918 के इन्दौर के अधिवेशन में दक्षिण में हिन्दी प्रचार की योजना बनाई। उनके पुत्री श्री देवदास गाँधी दक्षिण भारत में प्रथम हिन्दी प्रचारक के रूप में गए। दक्षिण भारत में प्रचारार्थ श्री सत्यदेव परिव्राजक आदि वहाँ पहुँचे। वहाँ प्रारंभ में हिन्दी साहित्य सम्मेलन के माध्यम से प्रचार हुआ। सन् 1927 में इसे दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास नाम दिया गया। इसके संस्थापकों में चक्रवर्ती राजगोपालचारी का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

unacademy

- राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा

हिन्दी साहित्य सम्मेलन का 25वाँ अधिवेशन सन् 1936 में नागपुर में हुआ। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद सम्मेलन के अध्यक्ष थे। श्री पुरुषोत्तमदास टण्डन के प्रस्तावानुसार दक्षिण में हिन्दी प्रचारार्थ 'हिन्दी प्रचार समिति' का गठन किया गया। इसका प्रथम अधिवेशन सन् 1936 में वर्धा में हुआ। काका कालेलकर के सुझाव पर इसका नाम बदल कर 'राष्ट्रभाषा प्रचार समिति' रखा गया। इस समिति का मुख्य उद्देश्य हिन्दी-प्रचार था और इसी आधार पर समिति मानती थी 'एक हृदय हो भारत जननी' समिति ने हिन्दी प्रचार-प्रसार के लिए सन् 1938 से अपनी परीक्षाओं का संचालन शुरू किया समिति ने जुलाई 1943 से 'राष्ट्रभाषा' मासिक पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया। इसके पश्चात् 'राष्ट्रभारती' पत्रिका का प्रकाशन किया गया। इस समिति के देश से बाहर लंका, स्याम, सुमात्र, मॉरिशस, इंग्लैंड आदि देशों में केन्द्र हैं।